[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3483

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

वर्तमान समयानुसार संगीत पाठ्यक्रमों में बदलाव की आवश्यकता

अनूप मोघे
सहायक प्राध्यापक संगीत
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय ग्वालियर म.प्र.

भारतीय कलाओं में नवीन प्रयोग एवं संभावनाएँ

भारतीय कलाओं में संगीत कला का विशेष महत्व है। संगीत कला अन्य कलाओं की तरह मानसिक बोध कराने की अनुकृति नहीं करती, बल्कि वह स्वयं की इच्छा की अनुकृति है और यह बोध कराने की क्रिया इसी की छाया है। संगीत के सशक्त प्रभाव का यही कारण है कि वह स्वयं असली तत्व की अभिव्यक्ति करता है। संगीत कला किसी विशेष सीमित आनन्द, दुःख, पीड़ा, भय, शांति या प्रसन्नता के व्यक्त नहीं करती बल्कि वह इनके सामान्य और सार्वभौमिक स्वरूप को अभिव्यक्ति देती है। संगीत हमारी आत्मा में भक्तिमय अनुभूतियां भर देता है।

संगीत द्वारा छात्र का बौद्धिक, भावात्मक और आध्यात्मिक विकास किया जा सकता है अतः इनके लिये वर्तमान पाठ्यक्रम में सुधार हेतु पूर्ण चिंतन किया जाना चाहिए। वर्तमान में स्नातक स्तर तक जो पाठ्यक्रम प्रचलित है वह उन विद्यार्थियों के लिये कठिन होता है जो सीधे स्नातक स्तर में संगीत विषय लेते हैं और जिन्हें पूर्व में संगीत का कोई ज्ञान नहीं होता है क्योंकि अधिकतर स्थानों पर विद्यालयों में संगीत विषय बंद कर दिया गया है। अतः स्नातक स्तर पर उन प्रारंभिक एवं प्रचलित रागों की भी जानकारी दी जानी चाहिए जो वर्तमान में नहीं दी जा रही है। कुछ विद्यार्थी प्रतिभावान होते हैं उन्हे पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भी सिखाया जाना चाहिए। जैसे खण्डमेरू पद्धति से स्वर प्रस्तार ज्ञान करना, मूर्च्छना का प्रयोग आदि जानकारी एम.ए. के साथ–साथ स्नातक स्तर पर भी दी जानी चाहिए जिससे प्रतिभावान विद्यार्थी दस थाटों में अलंकारों के अतिरिक्त स्वर प्रस्तार की भी साधना कर सके।

पाठ्यक्रम के साथ–साथ प्रश्न पत्रों के बनाने में परिवर्तन किया जाना चाहिए। यूनिट पद्धति के कारण विद्यार्थी पूर्ण पाठ्यक्रम में से कुछ चीजे याद ही नहीं करते है। अतः उनका ज्ञान अधूरा रहता है। जैसे परीक्षा में स्वरलिपि वाले प्रश्न में बहुत विकल्प रहते हैं किसी ध्रुपद अथवा धमार अथवा छोटे ख्याल की स्वरलिपि लिखने को आती है अतः विद्यार्थी किसी एक बंदिश की स्वरलिपि कण्ठस्थ करते हैं जबकि छोटे ख्याल की स्वरलिपि लिखने के लिये एक राग का नाम दिया जाना चाहिये जिससे विद्यार्थी सभी छोटे ख्याल की स्वरलिपि कण्ठस्थ करेंगे। इसी प्रकार रागवर्णन एवं ताल वाले प्रश्नों में राग एंव ताल का नाम दिया जाना चाहिये।

शिक्षण विधियाँ – संगीत में शैक्षणिक विधियों का प्रयोग बढ़ाया जाना चाहिये केवल व्याख्यान पद्धति द्वारा शिक्षण होने से विद्यार्थियों को कोई विशेष लाभ नहीं होने वाला है। अन्य विधियाँ भी अपनाई जानी चाहिये। डिस्कशन या विचार –विमर्श द्वारा विद्यार्थियों को नई–नई जानकारी प्राप्त होती है और विद्यार्थियों में संप्रेक्षण का विकास होता है। उसमें आत्म विश्वास बढ़ता है।

सेमिनार – इस विधि में विद्यार्थियों को अलग–अलग विषय दिये जाने चाहिये फिर वे अपने द्वारा एकत्र की गई जानकारी के व्यवस्थित ढंग से समझा सकेंगे इससे छात्रों की पढ़ने की आदत बढ़ेगी एवं सृजनात्मक शक्ति का विकास होगा। इसके लिये शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों में पुस्तकालय में बैठने की प्रवृत्ति का विकास किया जाना चाहिये। अपने विषय के पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विषय की अन्य पुस्तकों के अध्ययन करने की जिज्ञासा का भी उनमें उदय होना चाहिये। कुछ छात्रों की संगीत विषय में जन्मजात रूचि होती है। इसे शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

ट्यूटोरियल – इस विधि द्वारा विद्यार्थियों की शिक्षा से संबंधी समस्याओं को शिक्षक सुलझाने का प्रयत्न करते हैं। कक्षा में अलग अलग स्तर के विद्यार्थी होते हैं। कुछ विद्यार्थी शीघ्र ही दिया गया कार्य पूर्ण कर लेते हैं एवं कुछ विद्यार्थियों को बंदिशें कण्ठस्थ करने में समय लगता है। अतः ट्यूटोरियल विधि द्वारा विद्यार्थियों के अलग–अलग समूह बनाये जाने चाहिये एवं उन्हें संगीत शिक्षा दी जानी चाहिये। जो प्रतिभावान छात्र है उन्हें एक ही राग में विभिन्न तालों में बंदिशों को सिखाया जाना चाहिये।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मंच प्रदर्शन – इस विधि द्वारा स्नातक स्तर से ही विद्यार्थियों में श्रोताओं के सामने गायन–वादन करने का अभ्यास करवाया जाना चाहिये जिससे उनमें आत्म विश्वास बढ़ता है। मंच प्रदर्शन एक माह में दो बार किया जाना चाहिये और उसमें कुछ श्रोता भी आमंत्रित किये जा सकते हैं और अंत में शिक्षक द्वारा स्वयं किसी राग का गायन होना चाहिये । यह परम्परा कई निजी संस्थाओं में आज भी प्रचलित है।

अन्य गतिविधियाँ –

आमंत्रित वक्ता – महाविद्यालय में समय –समय पर संगीत से संबंधित वक्ताओं के व्याख्यान आयोजित किये जाने चाहिये जिससे छात्रों को किसी विशिष्ट विषय पर विस्तार से जानकारी प्राप्त होती है।

संगीत कार्यक्रम – महाविद्यालय में शास्त्रीय एंव सुगम संगीत के कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए । स्पिक मैके नामक संस्था इस हेतु सहयोग प्रदान करती है। यह संस्था किसी बड़े कलाकार का कार्यक्रम आयोजित करती है जिसमें व्याख्यान एवं प्रदर्शन दोनों ही सम्मिलित होता है।

ऑडियो, सी.डी. द्वारा संगीत शिक्षा – आजकल नेट एवं मोबाईल के कारण संगीत सीखने में बहुत सुविधा हो गई है। पाठ्यक्रम के रागों के ऑडियो केसेट्स एवं सी.डी. विद्यार्थियों को सुनवाये जाने चाहिये एवं विद्यार्थियों द्वारा गाई गई बंदिशों को रिकार्ड किया जाना चाहिये एवं उन्हें उनकी त्रुटियों की तरफ ध्यान दिलाया जाना चाहिये । इस विधि में राग पर आधारित फिल्मी गीतों, भजन, गजल आदि का भी उपयोग किया जा सकता है क्योंकि छात्रों को फिल्मी गीतों में आये रागों की भी जानकारी दी जानी चाहिये । इससे उन्हें शास्त्रीय संगीत की बंदिशों को सीखने में सुविधा होती है।

विभिन्न भाषाओं का ज्ञान – श्री नारायण मोरेश्वर खरे के अनुसार संगीत के विद्यार्थी एवं शिक्षक को विभिन्न भाषाओं का ज्ञान होना चाहिये।

चार्ट्स – विद्यार्थियों से विभिन्न प्रकार के चार्ट्स बनवाये जाने चाहिये और उन्हें संगीत के कक्ष में एवं घर पर भी लगवाया जाना चाहिये। जैसे विभिन्न रागों एवं तालों का चार्ट्स द्वारा दर्शाया जा सकता है । वाद्यों के भी चार्ट्स बनवाये जा सकते हैं। श्रुतियों का एक चार्ट बनवाया जा सकता है और उसमें प्राचीन एवं आधुनिक श्रुति स्वरस्थापना समझाई जा सकता है। 72 थाट, 32 थाट, खण्डमेरू की आकृति, स्वरप्रस्तार आदि को चार्ट्स द्वारा दर्शाया जाना चाहिये जिससे छात्रों को यह चीजे प्रतिदिन दिखने पर शीध्र ही याद हो सकती है।

वर्ग पहेली – संगीत से संबंधित जानकारी छात्रों को वर्ग पहेली द्वारा दी जानी चाहिये एवं उन्हें अन्य वर्ग पहेली स्वयं बनाने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये । प्लेइंग कार्ड्स – कई वर्षो पूर्व बीकानेर के पंडित जयचन्द शर्मा ने ऐसे उपकरण बनाए जिससे संगीत शिक्षण सरलतापूर्वक सिखाने की पद्धति विकसित हो सकती थी। इसमें प्लेइंग कार्डस प्रमुख है। इन कार्ड्स के उपर सा, रे ग आदि 12 स्वर अंकित होते हैं और इन स्वरों से राग बनाये जा सकते हैं। इसमें विद्यार्थी अपने शिक्षक के सहयोग से वे राग भी सीख सकते हैं जो उनके पाठ्यक्रम में नहीं है। इन कार्ड्स के अतरिक्त रागों के कार्ड्स भी बनाये जा सकते हैं जिन पर विभिन्न रागों के नाम लिखे होते है। जिस विद्यार्थी को जो कार्ड मिलता है उसे उस राग की बंदिश अर्थात् सरगम, लक्षणगीत, छोटा ख्याल, ध्रुपद, धमार, तराना, चतुरंग आदि में से कोई भी एक गाना पड़ता है या विद्यार्थी उस राग से संबंधित गजल या फिल्मी गीत भी गा सकता है। इससे खेल–खेल में छात्रों का बंदिशों का संग्रह बढ़ता है।

अन्त्याक्षरी – जिस प्रकार फिल्मी गीतों की अन्त्याक्षरी खेली जाती है उसी प्रकार संगीत में सरगम, लक्षणगीत, छोटेख्याल, ध्रुपद, तराना आदि गीत प्रकारों द्वारा अन्त्याक्षरी खेली जाती जा सकती है। जिससे नई–नई बंदिशें सीखने का अवसर प्राप्त होता है।

संगीत पत्रिकाएँ – विद्यार्थियों में संगीत पत्रिकाएँ पढ़ने की इच्छा जाग्रत की जानी चाहिये। इन पत्रिकाओं में संगीत मासिक एवं संगीत कला बिहार प्रमुख है जिसमें संगीत से संबंधित सामग्री प्राप्त होती है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत के विद्यार्थियों को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति के अतिरिक्त पलुस्कर स्वर लिपि पद्धति एवं पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति का भी विशेष ज्ञान करवाया जाना चाहिए। जिससे वे इन पद्धतियों में मुद्रित पुस्तकों का अध्ययन कर सके।

त्रिताल, एकताल, झपताल, आदि प्रचलित तालों के अतिरिक्त आडाचारताल, रूद्र , मत्त, शिखर, गजझम्पा, आदि तालों में भी बंदिशें सिखाई जानी चाहिये। पंडित भातखंडे की क्रमिक पुस्तक मालिका के साथ–साथ विभिन्न रचनाकारों की बंदिशों को सिखाया जाना चाहिये जैसे पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. बलवंतराय भट्ट, पं. विनयचन्द्र मौदगल्य, राजाभैया पुंछवाले, पं. दिनकर कोकणी, जयसुखलाल शाह, पं. रामाभय झा, पं. नारायण लक्ष्मण गुणे, डॉ. प्रभा अत्रे, पं. अश्विनी भिड़े, वीना सहस्त्रबुद्धे, डॉ. अनीता सेन, पं. गुणवंत व्यास, शंकरलाल मिश्र, पं. लक्ष्मण भट्ट तेलंग, आदि इनसे विभिन्न घरानों की बंदिशों को सीखने का अवसर मिलता है।

संगीत के प्रारंभिक विद्यार्थियों को सरगम, छोटाख्याल, के साथ–साथ बड़ा ख्याल, ध्रुपद, धमार, तराना, भजन, दादरा, ठुमरी, गीत, गज़ल का भी साधारण ज्ञान दिया जाना चाहिये। फिल्मी संगीत द्वारा भी रागो की जानकारी दी जा सकती है। इन परिवर्तिनों हेतु संगीत पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता है।

संदर्भ –

1.	*स्वरांगिनी*	*डॉ. प्रभा अत्रे*
2	*स्वरंजनी*	*डॉ. प्रभा अत्रे*
3	*बिसरतनाहि*	*डॉ. अनीता सेन*
4	*स्वरांग दर्शन*	*बालासाहेब पूछवाले*
5	*भावरंग लहरी भात्र 1,2,3*	*बलबंतराय भट्ट*
6	*भातखण्डे क्र.पु.मा.*	*भातखण्डे*
7	*मल्हारके प्रकार*	*जयसुखलाल शाह*
8	*गीत मंजरी*	*पं. विनयचन्द्र मौदगल्य*
9	*अभिनय गीतांजली*	*रामाश्रय झा*